बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2019 -2020 /2021
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - V (b)
व्याख्यान सं. - 17

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

प्रकरण - शान्ति शिक्षा की प्रासंगिकता (र्राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भ)

शांति शिक्षा की प्रासंगिकता उसे उद्देश्यों से समझी जा सकती है। इस यूनिट में शांति शिक्षा की प्रासंगिकता विस्तृत चर्चा अपेक्षित है। जैसा कि प्रमुख शिक्षाविद मारिया मान्टेसरी ने कहा है "सारी शिक्षा शांति के लिए ही है। " राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी कहा है , "यदि हम विश्व को वास्तविक शांति का पाठ पढ़ाना चाहते है तो हमें शुरुआत बच्चों से करनी होगी।"

उपरोक्त वक्तव्यों का यदि हम विश्लेषण करें तो पाएंगे कि हम राष्ट्र व विश्व में शांति स्थापित करना कहते हैं तो केवल राष्ट्र ही नहीं बल्कि विश्व के प्रत्येक नागरिक को हमें शिक्षित करना होगा। इसके लिए हमें बालक-बालिकाओं को उनकी बढ़ती उम्र के साथ पारिवारिक, सामुदायिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ईर्ष्या, द्वेष, जात -पात, छुआ-छूत, क्षेत्रवाद, धार्मिक कट्टरववाद आदि भावनाओं से दूर रहने की शिक्षा देनी होगी।

शांति शिक्षा की राष्ट्रीय प्रासंगिकता

हमारे देश में कई प्रकार के मुद्दे हैं जो देश की उन्नति में बाधक हैं । इनमें से कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं:-

1. **जातिवाद** - हमारे राष्ट्र की उन्नति के मार्ग में जातिवाद प्रमुख बाधा है। यहाँ के निवासी विभिन्न धर्मों तथा जातियों में विश्वास करते हैं जिसके कारण इन सब में आपसी मतभेद पाए जाते हैं। प्रत्येक जाति अथवा धर्म व्यक्ति दूसरे धर्म अथवा जाति के व्यक्ति से अपने आप को ऊंचा समझता है। वह राष्ट्रीय हित के व्यापक दृष्टिकोण को अपनाने में असमर्थ है। हम देखते हैं कि चुनाव के समय भी प्रत्येक व्यक्ति अपना मत प्रत्याशी की योग्यता को दृष्टि में रखकर नहीं अपितु धर्म तथा जाती के आधार पर देता है। यही नहीं चुनाव के पश्चात भी जब राजनीतिक सत्ता किसी अमुक वर्ग के हाथ में आ जाती है तो वह वर्ग अपने ही धर्म अथवा जाति के लोगों को अधिक से अहिदक लाभ पहुँचाने का प्रयास करता है

2. **साम्प्रदायिकता**- साम्प्रदायिकता भी राष्ट्रीय एकता के मार्ग में महान बाधा है। हमारे देश में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, आदि अनेक संप्रदाय पाए जाते हैं। यही नहीं, इन सम्प्रदायों में भी अनेक संप्रदाय हैं। उदाहरण के लिए, अकेला हिन्दू धर्म ही अनेक सम्प्रदायों में बंटा हुआ है। इन सभी सम्प्रदायों में आपसी विरोध तथा घृणा की भावना इस सीमा तक पहुँच गई है कि एक संप्रदाय के व्यक्ति दूसरे संप्रदाय को एक आँख से नही देख सकते। प्राय: सभी संप्रदाय राष्ट्रीय हितों को अपेक्षा केवल अपने-अपने सांप्रदायिक हितों को पूरा करने में ही जूटे हुए हैं। इससे राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ गई है।

3. **प्रान्तीयता** – भारत की राष्ट्रीय एकता के मार्ग में प्रान्तीयता भी एक बहुत बड़ी बाधा है। ध्यान देने की बात है कि हमारे देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ' राज्य पुनर्गठन आयोग' ने प्रशासन तथा जनता की विभिन्न सुविधाओं को दृष्टि में रखते हुए देश को चौदह राज्यों में विभाजित किया जाता था। इस विभाजन के आज विघटनकारी परिणाम निकल रहे हैं। हम देखते हैं कि अब भी जहाँ एक ओर भाषा के आधार पर नये-नये राज्यों की मांग की जा रही है वहाँ दूसरी ओर प्रत्येक राज्य यह चाहता है उसका केन्द्रीय सरकार पर सिक्का जम जाए। इस संकुचित प्रान्तीयता की भावना के कारण देश के विभिन्न राज्यों में परस्पर वैमन्स्य बढ़ता जा रहा है। इससे राष्ट्रीयता एकता एक जटिल समस्या बन गई है।

4. **आर्थिक विभिन्नता** – हमारे देश में व्याप्त आर्थिक असामनता भी राष्ट्र की उन्नति में बाधक है। संपूर्ण देश में केवल मुट्ठी भर लोग धनवान है तथा अधिकतर निर्धन। निर्धन होने के नाते लोगों के आगे रोटी की समस्या एक महान समस्या बनी हुई है जिसके सुलझाने में वे हर समय इतने व्यस्त रहते हैं कि राष्ट्रीय उन्नति के विषय में सोच भी नहीं सकते।

उपरोक्त बिंदुओं पर चिंतन करें तो इनमें धीरे-धीरे कमी वहीं आई है जहाँ लोग शिक्षित हैं। शिक्षित होने के साथ ही उनमें सहिष्णुता का प्रादुर्भाव हो जाता है। यह एक शांति स्थापित करने का महत्वपूर्ण पहलु है। **शांति शिक्षा के राष्ट्रीय महत्व** निम्नांकित हैं:-

1. ऐसी शिक्षा बच्चे में राष्ट्र के प्रति गर्व की भावना विकसित करती है।
2. इस प्रकार की शिक्षा धर्म-निरपेक्षता की भावना का विकास करती है।
3. इस प्रकार की शिक्षा से छात्रों लोकतांत्रिक संस्कृति का संचार होता है।
4. समस्त विद्यार्थियों में देश के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान कराती है।
5. स्वतंत्रता संबंधित विशेष बातों से परिचित कराती है।
6. राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए समस्त जातियों, सम्प्रदायों एवं राज्यों में आपसी सहयोग को प्रोत्साहित करती है।
7. प्रजातांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ता प्रदान करती है।